भारतीय विद्यालय डारसेट

हिंदी विभाग

पाठ: <u>दुख का अधिकार</u> संसाधन व्यक्ति: श्रीमती बीना स्टीफन विद्यार्थी का नाम :----------------------	कायपत्रिका की तिथिः ------------- तिथिः------------------------------ कक्षा : IX ब

	निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 25-लिखिए। म शब्दों 30	
.1	भगवाना कौन था ?	
उ.	भगवाना खरबूजे बेचने वाली बुढ़िया का बेटा था। भगवाना शहर के पास डेढ़ बीघा ज़मीन पर हरी तरकारियाँ तथा खरबूजे उगाया करता था। वह रोज़ ही उन्ह सब्जी मंडी या फुटपाथ पर बैठकर बेचा करता था। इस प्रकार वह अपने परिवार का निवाह करता था।	
.2	पोशाक हमारे लिए कब बंधन और अड़चन बन जाती है ?	
उ.	जब हम अपने से कम हैसियत रखने वाले मनुष्य के साथ बात करते ह तो हमारी पोशाक हम ऐसा नहीं करने देती। हम स्वयं को बड़ा मान बैठते ह और सामने वाले को छोटा मानकर उसके साथ बैठने तथा बात करने म संकोच अनुभव करते ह।	
.3	मनुष्य के जीवन म पोशाक का क्या महत्व है ?	
उ.	मनुष्य के जीवन म पोशाक का महत्व है। उसकी पोशाक ही समाज म उसका दजा तथा अधिकार तय करती है। पोशाक के कारण कभी उसके सब रास्ते खुल जाते ह और कभी अड़चन घेरती ह।	
.4	लेखक उस स्त्री के रोने का कारण क्यों नहीं जान पाया ?	
उ.	लेखक ने देखा कि वह स्त्री फुटपाथ पर बैठकर फफक पोशाक की लेखक । थी रही जी चली रोए फफककर-भी उसे इससे। था कठिन जानना चाल-हाल उसका बैठकर म बाज़ार उसके कि थी ऐसी स्थिति तथा । पाया जान नहीं कारण का रोने उसके भी चाहकर वह इसलिए। करते व्यंग्य भी लोग तथा होता संकोच	
5	भगवाना अपने परिवार का निवाह कैसे करता था ?	
उ.	भगवाना शहर के पास डेढ़ बीघा जमीन पर हरी तरकारियाँ तथा खरबूजे उगाया करता था। वह रोज ही उन्ह सब्जी मंडी या फुटपाथ पर बैठकर बेचा करता था। इस प्रकार वह कछिआरी करके अपने परिवार का	

	निवाह करता था।	
.6	लड़के की मृत्यु के दूसरे ही दिन बुढ़िया खरबूज़े बेचने क्यों चल पड़ी ?	
उ.	लड़के की मृत्यु के अगले ही दिन उसकी माँ के सामने पोतों की भूख और बहू की बीमारी की समस्या आ खड़ी हुई। पोते ,था नहीं पैसा म घर। थी रही तप से बुखार बहू और थे रहे बिलबिला से भूख पोतियाँ- इसलिए वह मजबूरी म पुत्र। पड़ी चल बेचने खरबूजे दिन ही अगले के शोक-	
.7	बुढ़िया के दुख को देखकर लेखक को अपने पड़ोस की संभ्रांत महिला की याद क्या आई ?	
उ.	लेखक ने बुढ़िया के पुत्र भी का धोने-रोने पास के बेचारी इस कि किया अनुभव उसने। देखा को शोक- और समयअधिकार नहीं है। तभी उसको तुलना म उसे अपने पड़ोस को संभ्रांत महिला को याद आ गई। वह महिला पुत्र। थी रही पड़ी पर पलंग तक महीने-ढ़ाई म शोक-	
	<u>निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 50-लिखिए। म शब्दों 60</u>	
.1	बाज़ार के लोग खरबूज़े बेचनेवाली स्त्री के बारे म क्या थे रहे कह क्या-? अपने शब्दों म लिखिए।	
उ.	बाज़ार के लोग खरबूज़े बेचनेवाली स्त्री के बारे म तरह रहा कह बेहया उसे कोई थे। रहे बना बात को तरह- कहा ने किसी। था कि उस स्त्री को नीयत ही ठीक नहीं है।एक आदमी ने कहा कि यह कमीनी औरत है जिसके लिए बेटा। है कुछ सब ही टुकड़ा का रोटी लिए उसके। है नहीं कुछ ईमान-धम ,लुगाई-खसम ,बेटी- के शोक-पुत्र। है रही मचा अँधेर बिगाड़कर ईमान-धम का औरों औरत यह कि कहा ने जी लाला एक । चाहिए छूना नहीं सामान कोई म दिनों इन उसे इसलिए। है म सूतक यह कारण	
.2	पास चला पता क्या को लेखक पर पूछने से दुकानों की पडोस-?	
उ.	पास की पडोस-दुकानों से पूछने पर लेखक को पता चला कि एक जवान पुत्र था – भगवाना। वह तेईस साल का था। वह शहर के पास डेढ़ बीघे जमीन पर सब्जियाँ उगाकर बेचा करता था। एक दिन पहले सुबह उसका कि था रहा तोड़ खरबूज़े हुए पके वह सवेरे - पैर एक साँप पर पड़ गया। साँप ने उसे डस लिया का घर बाद के मरने उसके। गई हो मौत उसको जिससे , अत। था नहीं कोई वाला करने गुजारा: मजबूरी म उसे अगले दिन खरबूज़े बेचन के लिए बाज़ार म बैठना पड़ा।	
.3	लड़के को बचाने के लिए बुढ़िया माँ ने क्या किए उपाय क्या -?	
उ.	बुढ़िया का बेटा भगवाना साँप के डसने से बेहोश हो गया था। जैसे ही बुढ़िया को पता चला उसका वह ,	

	ने ओझा लाई। बुला को ओझा के गाँव लिए के करने दूर विष खूब झाड़ न दूर विष का साँप परंतु का। फूँक-हो सका। बुढ़िया जो कर सकती थी पूजा को नागराज लिए के करने प्रसन्न को ओझा उसने किया। उसने , भी पर करने इतना परंतु दिया। कर हवाले के ओझा भी वह ,था अनाज और आटा जो म ।घर को भी सका न बच बेटा उसका।	
.4	लेखक ने बुढ़िया के दुख का अंदाजा कैसे लगाया?	
उ.	लेखक ने बुढ़िया के दुख का अंदाजा लगाने के लिए अपने पड़ोस म रहने वाली एक संभ्रांत महिला को याद किया। उस महिला का पुत्र पिछले वष चल बसा था। तब वह महीला ढाई मास तक पलंग पर पड़ी रही थी। उसे अपने पुत्र को याद म मूछा जाती थी। वह हर पन्द्रह मिनट बाद मूछित हो जाती थी। दो दो- – पुत्र थे। करते रहा बैठे-सिरहाने उसके हमेशा डॉक्टर शोक मनाने के सिवाय उसे कोई होश – हवास नहों था। उस महिला के दुख को तुलना करते हुए उसे अंदाजा हुआ कि इस गरीब बुढ़िया का दुख भी कितना बड़ा होगा।	
.5 उ.	इस पाठ का शीषक ‘ दुख का अधिकार ‘ कहा तक साथक है ? स्पष्ट कीजिए। इस पाठ का शीषक दुख का अधिकार एकदम उचित है। लेखक यह कहना चाहता है कि यद्यपि दुख प्रकट करना हर व्यक्ति का अधिकार है। परंतु हर कोई इसे संभव नहों कर पाता। एक महिला संपन्न है। उस पर कोई जिम्मेदारी नहों है। उसके पास पुत्र शोक मनाने कि लिए डॉक्टर हैसेवा ,है धन ,ह साधन ,ह कमी- । है समय परंतु गरीब लोग अभागे ह। वे चाहे भी तो शोक प्रकट करने के लिए आराम से दो आँसू नहों बहा सकते। सामने खड़ी भूखकर नाच नंगा बीमारी और ,गरीबी ,ने लगती है। अतः दुख प्रकट करने का अधिकार गरीबों को नही है।	